© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 06 | October-December 2015

डॉ. जगदीप शर्मा 'राही' के काव्य में सामाजिक चेतना

कविता कुमारी, सहायक प्रोफेसर,
के. एम. राजकीय महाविद्यालय, नरवाना, जींद (हरियाणा)

शोध आलेख सार

जगदीप शर्मा 'राही' ने सामाजिक बुराईयों को पारखी नजर से निहारा है। उनके काव्य में समाज की यथार्थता का वर्णन है। उन्होंने अपने काव्य में वास्तविकता पर प्रकाश डाला है न कि काल्पनिकता पर। उन्होंने जीवन में जो अनुभव किया, समाज में जो कुछ देखा उसी का यथातथ्य वर्णन अपने काव्य में किया है। उनके काव्य को पढ़कर ऐसा लगता है कि वे बड़े ही भावुक प्रकति के हैं और समाज से काफी जुड़कर रहते हैं। उन्होंने समाज की छोटी से छोटी बुराई और अच्छाई को बहुत ही नजदीक से अनुभव किया है तथा उसका वर्णन अपने काव्य में किया है। जगदीप शर्मा राही ने समाज के प्रत्येक वर्ग और परिवार की स्थिति का वर्णन किया है। कवि ने समाज में लोगों के दृष्टिकोण को अच्छी तरह से समझा है तथा उसी को अपने काव्य में वर्णित किया है। कवि ने समाज का जो चित्रण किया है वह वास्तविक है। उसमें काल्पनिकता नहीं है। कवि ने पारिवारिक मूल्यों पर दृष्टि डाली है। वे पारिवारिक सम्बन्धों, रिश्तों नातों को अच्छी तरह से समझते हैं।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

मुख्य शब्द सामाजिक दृष्टिकोण, समाज में लड़की का स्थान, ग्रामीण जीवन से प्रेम, स्वदेश प्रेम, सामाजिक नियम, पारिवारिक स्नेह।

सामाजिक दृष्टिकोण

आज लोगों का दृष्टिकोण इस प्रकार का है कि उनके चेहरे तथा उनकी बातों से उनकी असलियत का पता नहीं लगाया जा सकता। वे होते कुछ हैं और दिखाई कुछ ओर देते हैं। मनुष्य की जरूरत से ज्यादा जो आश्वासन और मद्द की मुस्कान होती है उससे लोग घबरा जाते हैं क्योंकि उससे वे अलग अलग अंदाजे लगा लेते हैं। मनुष्य समाज में रहते हुए अपने कार्य की पूर्ति के लिए किसी को भी मोहरा बना सकता है और वह किसी को भी अपनी अंगुली पर नचा सकता है। कवि ने समाज की यथार्थता का वर्णन करते हुए कहा है कि आज का मनुष्य इतना असभ्य हो गया है कि वह किसी के भी ईमान की बोली लगा सकता है और किसी को भी अपने शब्दों के जाल में फंसा सकता है। आज समाज में आदमी का व्यवहार इस प्रकार का है कि वह बेकार में जी हुजूरी करता है और सामने यदि गधा हो तो उसकी भी हाँ में हाँ मिलाता है। कवि ने अपनी 'आदमी' कविता के माध्यम से व्यक्ति के इसी व्यवहार का वर्णन किया है

Note : For Complete paper/article please contact us info@jrps.in
Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper